Sri Guru Gobind Singh College of Commerce
(University of Delhi)

Seminar Committee | सेमिनार समिति | ਸੈਮੀਨਾਰ ਕਮੇਟੀ

presents | द्वारा प्रस्तुत | ਵੱਲੋਂ

First	पहली	ਪਹਿਲੀ
Winter	शीतकालीन	ਸਰਦ ਰੁੱਤ
Language Conference	भाषा संगोष्ठी	ਭਾਸ਼ਾ ਕਾਨਫਰੰਸ

Language & Literature in Digital Era
डिजिटल युग में भाषा और साहित्य
ਡਿਜੀਟਲ ਯੁੱਗ ਵਿਚ ਭਾਸ਼ਾ ਅਤੇ ਸਾਹਿਤ

08.11.2024
Friday | शुक्रवार | ਸ਼ੁੱਕਰਵਾਰ

Sri Guru Gobind Singh College of Commerce
(University of Delhi)
NAAC A++ Accredited | NIRF Rank 39
Pitam Pura, Delhi 110034, India
Phone: 011-20871260 / 20871262
Website: www.sggscc.ac.in

ABOUT COLLEGE I महाविद्यालय के बारे में I ਕਾਲਜ ਬਾਰੇ

Sri Guru Gobind Singh College of Commerce, founded in 1984 is a premier institute of the University of Delhi specializing in Commerce, Economics, Business Studies, and Computer Science. It has been accredited with an 'A++' grade by National Assessment and Accreditation Council and has an NIRF Ranking of #39 in the year 2024. The College regularly organizes Seminars, Conferences, Workshops, and Faculty Development Programmes which contribute to the holistic pursuit of education in terms of inquisitive research orientation, analytical rigor, and quantitative skill enhancement of both the student and teacher fraternity.

राष्ट्रीय मूल्यांकन और प्रत्यायन परिषद द्वारा ए++ ग्रेड प्राप्त और एनआईआरएफ रैंकिंग में 39वें स्थान पर स्थित श्री गुरु गोबिंद सिंह कॉलेज ऑफ़ कॉमर्स दिल्ली विश्वविद्यालय का प्रतिष्ठित महाविद्यालय है। 1984 में स्थापित यह महाविद्यालय वाणिज्य, अर्थशास्त्र, व्यवसायिक अध्ययन और कम्प्यूटर विज्ञान के साथ-साथ विद्यार्थियों के चहुमुखी विकास के लिए भाषा व साहित्य की प्रगति में भी निरंतर प्रयासरत है और सफलता प्राप्त कर रहा है। महाविद्यालय विद्यार्थियों को शिक्षा के साथ प्रशिक्षण में भी नए अवसर प्रदान कर उन्हें भविष्य में सफल नागरिक बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रहा है। समकालीन जन जीवन, घटनाओं और विषयों पर विमर्श के लिए और उन पर शोध कार्यों को प्रोत्साहित करने के लिए महाविद्यालय समय-समय पर राष्ट्रीय स्तर पर सम्मेलनों, कार्यशालाओं और संगोष्ठियों आदि का आयोजन करता रहता है।

ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਗੋਬਿੰਦ ਸਿੰਘ ਕਾਲਜ ਆਫ਼ ਕਾਮਰਸ, ਦਿੱਲੀ ਯੂਨੀਵਰਸਿਟੀ ਦਾ ਇਕ ਪ੍ਰਮੁੱਖ ਕਾਲਜ ਹੈ। ਦਿੱਲੀ ਸਿੱਖ ਗੁਰਦੁਆਰਾ ਪ੍ਰਬੰਧਕ ਕਮੇਟੀ ਦੁਆਰਾ 1984 ਵਿਚ ਸਥਾਪਿਤ ਕੀਤੇ ਗਏ ਇਸ ਕਾਲਜ ਨੇ ਵਿਦਿਅਕ ਪ੍ਰਬੀਨਤਾ ਦੀਆਂ ਸਿਖਰਾਂ ਨੂੰ ਛੁਹਿਆ ਹੈ। ਇਸ ਕਾਲਜ ਨੇ ਉਚੇਰੀ ਵਿੱਦਿਆ ਦੇ ਖੇਤਰ ਵਿਚ ਇਕ ਅਜਿਹਾ ਮਿਆਰ ਸਥਾਪਿਤ ਕੀਤਾ ਹੈ ਜਿਸ ਵਿਚ ਵਿਦਿਆਰਥੀ, ਰਾਸ਼ਟਰੀ ਅਤੇ ਅੰਤਰ-ਰਾਸ਼ਟਰੀ ਪੱਧਰ ਉਤੇ, ਆਪਣੇ ਤੇ ਸਮਾਜ ਦੇ ਵਿਕਾਸ ਲਈ ਯਤਨਸ਼ੀਲ ਰਹਿੰਦੇ ਹਨ। ਕਾਲਜ ਨੂੰ ਰਾਸ਼ਟਰੀ ਮੁਲਾਂਕਣ ਅਤੇ ਮਾਨਤਾ ਕਾਉਂਸਲ (NAAC) ਦੁਆਰਾ A++ ਗਰੇਡ ਨਾਲ ਨਿਵਾਜਿਆ ਗਿਆ ਹੈ ਅਤੇ ਸੰਸਥਾ, ਐਨ. ਆਈ. ਆਰ. ਐਫ. (NIRF) ਦੀ ਰੈਂਕਿੰਗ ਅਨੁਸਾਰ 39ਵੇਂ ਸਥਾਨ ਉੱਪਰ ਕਾਬਜ਼ ਹੈ। ਮਿਹਨਤੀ ਵਿਦਿਆਰਥੀ ਅਤੇ ਸਮਰਪਿਤ ਅਧਿਆਪਕਾਂ ਦੇ ਮਿਲਵੇਂ ਉੱਦਮਾਂ ਰਾਹੀਂ ਕਾਲਜ ਲਗਾਤਾਰ ਤਰੱਕੀ ਦੀਆਂ ਪੁਲਾਂਘਾਂ ਪੁੱਟ ਰਿਹਾ ਹੈ।

ABOUT CONFERENCE I संगोष्ठी के बारे में I ਕਾਨਫਰੰਸ ਬਾਰੇ

Twentieth century is referred to as the century of science and technology. The digital revolution that took place in this century has transformed the way of thinking of people while profoundly affecting their attitude. During the eighth decade of last century, the digital revolution caused by Internet in India had an intense impact on the entire socio-cultural and economic structure of the country. Government of India launched the Digital India initiative in 2015, which aimed to make increased services available to the common people through use of electronic means and also to reduce the gap between the Government and people. With technological advancements, there has been a significant push towards innovation and progress. The digital world has not only impacted the way we live but has also influenced our society and culture in many ways. This transformation has been evident in various disciplines, particularly in literature and language. New digital forms have emerged as a result of technological advancements providing the readers with so many more ways than ever before to access and enjoy literature. A watershed moment in literary history has come with the introduction of electronic books or e-books. The advent of digital literacy has made English Literature more accessible to a wider audience through E-books, audio books and online platforms for discussion.

The proliferation of digital technology is allowing both, readers and writers to enter into a more informed discourse, thereby enabling better understanding of culture and its influence on our ability to communicate or replicate ideas. Despite these positive changes, there are certain challenges that our society faces today. Firstly, the increasing use of English in digital communication has overshadowed other regional languages. Secondly, the era of digital technology has resulted in a substantial change in language development especially for the younger generation. The dissemination, combined with social media accessibility, calls for a careful use of English language. Thirdly, the digital era has brought about profound changes in our language altering not just the way we speak and write but also how we express emotions, share information and connect with one another. The linguistic landscape is evolving continuously and it is important to embrace the changes and appreciate the ways in which technology enriches our communication. Fourthly, while there are benefits of technology, social disruption is being caused by its misuse impacting the society and its health. Recognizing and adapting to the challenges posed by the digital age is the key to ensuring that language and literature remain a central force in the cultural and intellectual landscape in the 21st century. In the face of these questions, a national conference on 'Language and Literature in the Digital Era' is being organized (in English, Hindi, and Punjabi). In this conference, an effort will be made to shed light on the state and condition of languages and literature in the age of digital revolution through the suggestions presented by the experts.

समय की गति और बदलती जीवन शैली ने डिजिटल दुनिया के अस्तित्व निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। डिजिटल क्रांति ने काल्पनिक संसार को वास्तविकता में परिवर्तित कर असंभव को संभव बनाया है। भारत सरकार ने भी इसके महत्व को समझते हुए 'डिजिटल इंडिया' अभियान का आरंभ किया। जिसका मुख्य उद्देश्य था 'बिना कागज का प्रयोग किए सरकारी सेवाएं जनता तक पहुँचना'। इससे स्थानीय भाषाओं के तकनीकी विकास की बात ने भी जोर पकड़ा और आज इस क्षेत्र में विकास कार्य प्रगति पर है। विज्ञान और प्रौद्योगिकी से नव-निर्मित इस डिजिटल दुनिया ने जहां दूरियों को घटाया और समय को बचाने के कई यत्न किए वहीं इसके कुछ अन्य पहलुओं से आंख मूंद कर किनारा नहीं किया जा सकता। यह सच है कि आज की सदी हमें बहुत सी सुविधाएं प्रदान करती है परंतु इस बात से भी इनकार नहीं किया जा सकता कि डिजिटल दुनिया ने भी हमारे समाज और संस्कृति को गहराई से प्रभावित किया है। समाज व संस्कृति के बदलाव का प्रभाव भाषा व साहित्य पर प्रत्यक्ष ही है। आज साहित्य-लेखन की विषय वस्तु, सम्वेदना और शैली में बदलाव देखा जा सकता है। डिजिटल युग में भाषा के सरलीकरण की प्रक्रिया में स्थानीय भाषाओँ के न जाने कितने शब्द रोज मर रहे हैं। सांकेतिक भाषा का चलन और ई पुस्तक व सामग्री वर्तमान विद्यार्थियों की जीवनी शैली का हिस्सा है। प्रत्यक्ष रूप से पुस्तकों से अध्ययन करने की बजाय ई पुस्तकों का प्रचलन बढ़ा है। डिजिटल युग ने विभिन्न भाषाओँ को समझना आसान बनाया है तो भाषा की मूल संरचना भी उससे प्रभावित हुई है। हिंदी भाषा की वैज्ञानिकता को समझते हुए कंप्यूटर के लिए उसे उपयुक्त भाषा का दर्जा दिया गया है परन्तु यह दुर्भाग्य है कि हमारा समाज आज स्थानीय भाषाओँ को कमतर आंकता है। हालाँकि वर्तमान भारत सरकार हिंदी व स्थानीय भाषाओँ की डिजिटल उन्नति के लिए कमर कसे हुए है। जमीनी स्तर पर देखा जाए तो स्वयं स्थानीय भाषा प्रयोक्ता अपनी राजभाषा व मातृभाषा के प्रति गर्व का भाव रख उसका प्रयोग करे तो कुछ अच्छे परिणाम देखें जा सकते हैं। विभिन्न सरकारी व गैर सरकारी कार्यालयों में तकनीकी रूप से भी राजभाषा में कार्य करने पर जोर दिया गया है। वर्चुअल साहित्य से कुछ ऐसी पुस्तकों को पढ़ना भी सम्भव हुआ है जिनकी हार्ड कॉपी आसानी से उपलब्ध नही होती परन्तु कहीं न कहीं पुस्तकों की सॉफ्ट कॉपी से पाठक का जुड़ाव ज्यादा ही बनता है। डिजिटल युग में यह सम्भव हो सका है कि किसी भी भाषा के साहित्य का अनुवाद भी आसानी उपलब्ध हो सकता है और एक साथ अनेकों लोग एक पाठ को पढ़ सकते हैं जबकि एक पुस्तक को अनेकों लोग एक साथ नही पढ़ सकते। पर क्या इस बात से इनकारजा सकता है कि मूल पाठ को किसी पुस्तक से पढ़ने वाला पाठक अधिक सह्रदय होता है। यह एक पाठक की अपनी निजी पसंद हो सकती है।

भाषा के साथ समझौता करना अर्थात देश की अखंड संस्कृति के साथ समझौता करना माना जाए तो सूचना क्रांति के युग में भाषा की जीवन्तता का प्रश्न खड़ा हो जाता है। वर्तमान समाज में समय की बाध्यताओं को देखते हुए डिजिटल पाठ की उपयोगिता भी स्वयं सिद्ध है। एक ओर सोशल मीडिया के प्रभाव में भाषा दूषित हो रही है तो दूसरी ओर ई-संस्कृति के कारण समाज और साहित्य में व्यापक बदलाव आ रहा है। इन तथ्यों ने कई नए मुद्दों को जन्म दिया है जो इस संगोष्ठी की प्रासंगिकता को दर्शाते हैं। इन सवालों को ध्यान में रखते हुए 'डिजिटल युग में भाषा और साहित्य' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया है। इस संगोष्ठी में विशेषज्ञों द्वारा प्रस्तुत सुझावों के माध्यम से डिजिटल क्रांति के युग में भाषा और साहित्य की स्थिति और उनकी दिशा पर प्रकाश डालने का प्रयास किया जाएगा।

ਵੀਹਵੀਂ ਸਦੀ ਵਿਗਿਆਨ ਅਤੇ ਤਕਨਾਲੌਜੀ ਦੀ ਸਦੀ ਕਹੀ ਜਾਂਦੀ ਹੈ। ਇਸ ਵਿਚ ਹੋਏ ਡਿਜੀਟਲ ਵਿਕਾਸ ਨੇ ਜਿਥੇ ਲੋਕਾਂ ਦੇ ਸੋਚਣ ਦੇ ਤਰੀਕਿਆਂ ਨੂੰ ਬਦਲਿਆ, ਉਥੇ ਹੀ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀ ਰਹਿਣੀ-ਬਹਿਣੀ ਉਪਰ ਵੀ ਡੂੰਘਾ ਪ੍ਰਭਾਵ ਪਾਇਆ। ਪਿਛਲੀ ਸਦੀ ਦੇ ਅੱਠਵੇਂ ਦਹਾਕੇ ਦੌਰਾਨ ਭਾਰਤ ਵਿਚ ਕੰਪਿਊਟਰ ਦੀ ਆਮਦ ਨਾਲ ਆਈ ਡਿਜੀਟਲ ਕ੍ਰਾਂਤੀ ਦਾ ਸਾਡੇ ਸਮਾਜ-ਸਭਿਆਚਾਰ ਅਤੇ ਆਰਥਿਕ ਢਾਂਚੇ ਉਪਰ ਡੂੰਘਾ ਪ੍ਰਭਾਵ ਪਿਆ। ਤਕਨਾਲੌਜੀ ਦੇ ਇਸ ਵੱਧਦੇ ਪ੍ਰਭਾਵ ਦੇ ਚਲਦੇ, ਭਾਰਤ ਸਰਕਾਰ ਵੱਲੋਂ 2015 ਵਿਚ ਡਿਜੀਟਲ ਭਾਰਤ ਅਭਿਆਨ ਸ਼ੁਰੂ ਕੀਤਾ ਗਿਆ ਜਿਸ ਦਾ ਮਕਸਦ ਇਲੈਕਟ੍ਰਾਨਿਕ ਮਾਧਿਅਮਾਂ ਰਾਹੀਂ ਆਮ ਲੋਕਾਂ ਤੱਕ ਸੇਵਾਵਾਂ ਪਹੁੰਚਾਉਣ ਦੇ ਨਾਲ-ਨਾਲ ਸਰਕਾਰ ਅਤੇ ਲੋਕਾਂ ਵਿਚਲੀ ਦੂਰੀ ਨੂੰ ਘਟਾਉਣਾ ਸੀ। ਇਸ ਦੇ ਨਾਲ ਹੀ ਸਥਾਨਕ ਭਾਸ਼ਾਵਾਂ ਵਿਚ ਡਿਜੀਟਲ ਸਮੱਗਰੀ ਦੀ ਘਾਟ ਨੂੰ ਪੂਰਾ ਕਰਨ ਦੇ ਜਤਨ ਵੀ ਕੀਤੇ ਗਏ। 2015 ਤੋਂ ਲੈ ਕੇ ਹੁਣ ਤੱਕ ਡਿਜੀਟਲ ਖੇਤਰ ਵਿਚ ਸਰਕਾਰ ਵੱਲੋਂ ਕਈ ਅਹਿਮ ਕਦਮ ਚੁੱਕੇ ਗਏ ਹਨ ਜਿਸ ਨਾਲ ਵਿਕਾਸ ਦੇ ਕਈ ਖੇਤਰ ਖੁਲ੍ਹ ਗਏ। ਪਰੰਤੂ ਸੰਸਾਰ ਭਰ ਵਿਚ ਇਲੈਕਟ੍ਰਾਨਿਕ ਮਾਧਿਅਮਾਂ ਰਾਹੀਂ ਉਸਰ ਰਹੇ ਡਿਜੀਟਲ ਯੁਗ ਨੇ ਸਥਾਨਕ ਭਾਸ਼ਾਵਾਂ ਸਾਹਮਣੇ ਕਈ ਵੰਗਾਰਾਂ ਵੀ ਖੜੀਆਂ ਕਰ ਦਿੱਤੀਆਂ ਹਨ। ਕਿਉਂਕਿ ਕੰਪਿਊਟਰ ਦਾ ਆਰੰਭ ਪੱਛਮ ਵਿਚ ਹੋਇਆ ਇਸ ਕਾਰਨ ਕੰਪਿਊਟਰ ਦੀ ਦੁਨੀਆ ਵਿਚ ਸਥਾਨਕ ਭਾਸ਼ਾਵਾਂ ਦੇ ਮੁਕਾਬਲੇ, ਅੰਗਰੇਜ਼ੀ ਦਾ ਦਬਦਬਾ ਵੇਖਿਆ ਜਾ ਸਕਦਾ ਹੈ। ਸਥਾਨਕ ਭਾਸ਼ਾਵਾਂ ਭਾਵੇਂ ਤਕਨਾਲੌਜੀ ਦੇ ਹਾਣ ਦਾ ਬਣਨ ਲਈ ਲਗਾਤਾਰ ਯਤਨਸ਼ੀਲ ਹਨ, ਪਰੰਤੂ ਸਮੇਂ ਦੀ ਲੋੜ ਇਹ ਹੈ ਕਿ ਭਾਸ਼ਾ ਅਤੇ ਸਾਹਿਤ ਦੇ ਗੌਰਵ ਨੂੰ ਬਹਾਲ ਰੱਖਣ ਲਈ ਇਸ ਖੇਤਰ ਵਿਚ ਠੋਸ ਕਦਮ ਚੁੱਕੇ ਜਾਣ।

ਡਿਜੀਟਲ ਯੁੱਗ ਨੇ ਜਿਥੇ ਆਮ ਲੋਕਾਂ ਦੇ ਜੀਵਨ ਅਤੇ ਕੰਮਾਂ ਨੂੰ ਸੌਖੇ ਤਰੀਕੇ ਨਾਲ ਕਰਨ ਦੀ ਸਹੂਲੀਅਤ ਪ੍ਰਦਾਨ ਕੀਤੀ ਹੈ, ਉਥੇ ਹੀ ਸਾਨੂੰ ਇਸ ਦੀ ਵਰਤੋਂ ਵਿਹਾਰ ਨਾਲ ਜੁੜੀਆਂ ਕਈ ਸਮੱਸਿਆਵਾਂ ਦੇ ਰੂ-ਬ-ਰੂ ਵੀ ਕਰਾਇਆ ਹੈ। ਇਕ ਪਾਸੇ ਤਕਨਾਲੌਜੀ ਦੇ ਫਾਇਦੇ ਹਨ ਅਤੇ ਦੂਜੇ ਪਾਸੇ ਇਸ ਦੀ ਦੁਰਵਰਤੋਂ ਕਾਰਨ ਆਈ ਸਮਾਜ ਵਿਚ ਨੈਤਿਕ ਗਿਰਾਵਟ। ਇਕ ਪਾਸੇ ਸੋਸ਼ਲ ਮੀਡੀਆ ਦੇ ਪ੍ਰਭਾਵ ਅਧੀਨ ਭਾਸ਼ਾ ਵਿਚ ਪੈਂਦਾ ਵਿਗਾੜ ਹੈ, ਉਥੇ ਹੀ ਦੂਜੇ ਪਾਸੇ ਈ-ਕਲਚਰ ਦੇ ਕਾਰਨ ਸਮਾਜ ਅਤੇ ਸਾਹਿਤ ਵਿਚ ਆਈ ਭਾਰੀ ਤਬਦੀਲੀ। ਇਨ੍ਹਾਂ ਮੁੱਦਿਆਂ ਨੇ ਕਈ ਨਵੀਆਂ ਬਹਿਸਾਂ ਨੂੰ ਜਨਮ ਦੇ ਦਿੱਤਾ ਹੈ। ਇਸ ਤੋਂ ਇਲਾਵਾ ਡਿਜੀਟਲ ਯੁਗ ਵਿਚ ਫੈਲ ਰਹੇ ਈ-ਕਲਚਰ ਨੇ ਪਾਠਕਾਂ ਅਤੇ ਖਾਸ ਤੌਰ 'ਤੇ ਵਿਦਿਆਰਥੀਆਂ ਨੂੰ ਕਿਤਾਬਾਂ ਤੋਂ ਦੂਰ ਕਰਕੇ ਈ-ਕਿਤਾਬਾਂ ਨਾਲ ਜੋੜਨਾ ਸ਼ੁਰੂ ਕਰ ਦਿੱਤਾ ਹੈ। ਇਥੇ, ਇਕ ਅਹਿਮ ਸਵਾਲ ਇਹ ਵੀ ਪੈਦਾ ਹੁੰਦਾ ਹੈ ਕਿ ਕੀ ਕਿਤਾਬ ਹਾਰਡ ਕਾਪੀ ਭਾਵ ਭੌਤਿਕ ਰੂਪ ਵਿਚ ਪੜ੍ਹਨੀ ਠੀਕ ਹੈ ਜਾਂ ਸਾਫਟ ਰੂਪ ਵਿਚ ਡਿਜੀਟਲ ਜੰਤਰ ਉਪਰ? ਇਨ੍ਹਾਂ ਨੁਕਤਿਆਂ ਤੋਂ ਹੀ ਸਾਡੀ ਇਸ ਕਾਨਫਰੰਸ ਦੀ ਸਾਰਥਕਤਾ ਨੂੰ ਪਛਾਣਿਆ ਜਾ ਸਕਦਾ ਹੈ। ਇਨ੍ਹਾਂ ਸਵਾਲਾਂ ਦੇ ਸਨਮੁਖ ਹੁੰਦਿਆਂ, ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਗੋਬਿੰਦ ਸਿੰਘ ਕਾਲਜ ਆਫ਼ ਕਾਮਰਸ ਦੀ ਸੈਮੀਨਾਰ ਕਮੇਟੀ ਵੱਲੋਂ ਸਰਦ ਰੁੱਤ ਭਾਸ਼ਾ ਕਾਨਫਰੰਸ ਦੇ ਅੰਤਰਗਤ 'ਡਿਜੀਟਲ ਯੁਗ ਵਿਚ ਭਾਸ਼ਾ ਅਤੇ ਸਾਹਿਤ' ਵਿਸ਼ੇ ਉਪਰ ਰਾਸ਼ਟਰੀ ਕਾਨਫਰੰਸ ਨੂੰ ਉਲੀਕਿਆ ਗਿਆ ਹੈ ਜਿਸ ਵਿਚ ਖਾਸ ਤੌਰ 'ਤੇ ਤਿੰਨ ਭਾਸ਼ਾਵਾਂ (ਅੰਗਰੇਜ਼ੀ/ਪੰਜਾਬੀ/ਹਿੰਦੀ) ਵਿਚ ਖੋਜ-ਪੱਤਰ ਭੇਜੇ ਜਾ ਸਕਦੇ ਹਨ। ਇਸ ਕਾਨਫਰੰਸ ਵਿਚ ਵਿਦਵਾਨਾਂ ਵੱਲੋਂ ਪੇਸ਼ ਸੁਝਾਵਾਂ ਰਾਹੀਂ ਡਿਜੀਟਲ ਕ੍ਰਾਂਤੀ ਦੇ ਯੁਗ ਵਿਚ ਭਾਸ਼ਾਵਾਂ ਅਤੇ ਸਾਹਿਤ ਦੀ ਦਸ਼ਾ ਅਤੇ ਦਿਸ਼ਾ ਉਪਰ ਚਾਨਣਾ ਪਾਉਣ ਦਾ ਜਤਨ ਕੀਤਾ ਜਾਏਗਾ।

Objectives

- To explore the impact of the digital world on literature and language.
- To understand the challenges faced by English literature and language in the digital age.
- To investigate and address the negative impact of social media on English language.
- To analyze the social changes brought about by the digital revolution.
- To highlight the various aspects of e-culture emerging in the virtual society.
- To discuss ways of developing language and literature through the use of technology in the virtual world

संगोष्ठी का उद्देश्य

- वर्तमान समाज में डिजिटल दुनिया के प्रभाव का आकलन करना।
- डिजिटल दुनिया में भाषा और साहित्य के सामने आने वाली चुनौतियों की पहचान करना ।
- डिजिटल या सोशल मीडिया के कारण भाषा को होने वाले नुकसान का विश्लेषण करना और इस मुद्दे को हल करने के तरीके सुझाना।
- स्थानीय भाषाओँ को डिजिटल बनाने में आने वाली समस्याओं की पड़ताल करना।
- डिजिटल क्रांति के कारण साहित्य में होने वाले बदलावों की पहचान करना ।
- डिजिटल समाज में उभर रहे ई-संस्कृति के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डालना।
- डिजिटल युग में प्रौद्योगिकी के उपयोग के माध्यम से भाषा और साहित्य के विकास के तरीकों पर चर्चा करना।
- वर्चुअल युग में भाषा और साहित्य के अनुवाद की सम्भावनाओं व समस्याओं पर विचार विमर्श करना ।

ਕਾਨਫਰੰਸ ਦਾ ਉਦੇਸ਼

- ਉਤਰਆਧੁਨਿਕ ਦੌਰ ਵਿਚ ਡਿਜੀਟਲ ਕ੍ਰਾਂਤੀ ਦੀ ਪਛਾਣ ਸੁਨਿਸ਼ਚਿਤ ਕਰਨਾ
- ਡਿਜੀਟਲ ਯੁਗ ਵਿਚ ਭਾਸ਼ਾ ਤੇ ਸਾਹਿਤ ਦੇ ਦਰਪੇਸ਼ ਵੰਗਾਰਾਂ ਦੀ ਪਛਾਣ ਕਰਨਾ
- ਡਿਜੀਟਲ ਖੇਤਰ ਜਾਂ ਸੋਸ਼ਲ ਮੀਡੀਆ ਦੇ ਕਾਰਨ ਭਾਸ਼ਾ ਵਿਚ ਆਏ ਵਿਗਾੜ ਅਤੇ ਇਸ ਬਾਰੇ ਸੁਝਾਵਾਂ ਦਾ ਵਿਸ਼ਲੇਸ਼ਣ ਕਰਨਾ
- ਡਿਜੀਟਲ ਕ੍ਰਾਂਤੀ ਕਾਰਨ ਆਏ ਸਾਹਿਤਕ ਬਦਲਾਵਾਂ ਦੀ ਨਿਸ਼ਾਨਦੇਹੀ ਕਰਨਾ
- ਡਿਜੀਟਲ ਸਮਾਜ ਵਿਚ ਉਸਰ ਰਹੇ ਈ-ਕਲਚਰ ਦੇ ਵਿਭਿੰਨ ਪੱਖਾਂ ਨੂੰ ਉਭਾਰਨਾ
- ਡਿਜੀਟਲ ਯੁਗ ਵਿਚ ਤਕਨਾਲੌਜੀ ਦੀ ਵਰਤੋਂ ਰਾਹੀਂ ਭਾਸ਼ਾ ਅਤੇ ਸਾਹਿਤ ਦੇ ਵਿਕਾਸ ਦੇ ਰਾਹਾਂ ਉਪਰ ਵਿਚਾਰ ਕਰਨਾ

Research Suggestions

- Digital socio-culture emerging in the post-colonial era
- Degradation of the language on social media and various OTT platforms.
- Challenges faced by English language and literature in the digital age.
- Present state and future of e-libraries and e-books in emerging e-culture.
- Artificial intelligence and regional languages.
- Different softwares available for regional languages and their uses.
- The state of translation in the digital world
- Cultural change due to the digital revolution.
- Physical books vs e-books
- Various YouTube channels and podcasts associated with language and literature.
- Contribution of smart phones in the field of language and literature
- Publication and access to literature in the digital age

शोधपत्रों के लिए सुझाव

- उत्तर-औपनिवेशिक युग में उभरती डिजिटल सामाजिक-संस्कृति
- सोशल मीडिया और विभिन्न ओटीटी प्लेटफॉर्म पर भाषा में गिरावट
- डिजिटल युग में विभिन्न भाषाओं के सामने आने वाली चुनौतियाँ
- हिंदी भाषा और साहित्य पर डिजिटल दुनिया का प्रभाव
- उभरती हुई ई-संस्कृति में ई-लाइब्रेरी और ई-पुस्तकों की वर्तमान स्थिति और भविष्य
- हिंदी व स्थानीय भाषाओं में उपलब्ध विभिन्न सॉफ्टवेयर और उनके उपयोग
- डिजिटल दुनिया में अनुवाद की स्थिति
- भौतिक पुस्तकें बनाम ई-पुस्तकें
- भाषा और साहित्य से जुड़े विभिन्न यूट्यूब चैनल और पॉडकास्ट
- भाषा और साहित्य के क्षेत्र में स्मार्ट फोन का योगदान
- इन्टरनेट और हिंदी पत्र-पत्रिकाएँ
- कम्प्यूटर और हिंदी भाषा
- डिजिटल हिंदी अनुवाद की सम्भावनाएं और चुनौतियां
- हिंदी का डिजिटलीकरण और रोजगार
- ई-संस्कृति के अंतर्गत उभरते ई-पुस्तकालयों एवं ई-पुस्तकों का वर्तमान एवं भविष्य
- आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और स्थानीय भाषाएँ
- हिंदी साहित्य को डिजिटल बनाने की चुनौतियां और निदान
- डिजिटल क्रांति और नई हिंदी

ਖੋਜ-ਪੱਤਰਾਂ ਲਈ ਸੁਝਾਅ

- ਉਤਰ-ਬਸਤੀਵਾਦੀ ਦੌਰ ਵਿਚ ਉਸਰ ਰਿਹਾ ਡਿਜੀਟਲ ਸਮਾਜ-ਸਭਿਆਚਾਰ
- ਸੋਸ਼ਲ ਮੀਡੀਆ ਅਤੇ ਵਿਭਿੰਨ ਓ.ਟੀ.ਟੀ. ਪਲੇਟਫਾਰਮਾਂ ਉਪਰ ਭਾਸ਼ਾ ਦੇ ਪੱਧਰ 'ਤੇ ਆਈ ਗਿਰਾਵਟ
- ਡਿਜੀਟਲ ਯੁਗ ਵਿਚ ਵਿਭਿੰਨ ਭਾਸ਼ਾਵਾਂ ਦੇ ਦਰਪੇਸ਼ ਵੰਗਾਰਾਂ
- ਈ-ਕਲਚਰ ਅਧੀਨ ਉਸਰ ਰਹੀਆਂ ਈ-ਲਾਇਬ੍ਰੇਰੀਆਂ ਅਤੇ ਈ-ਕਿਤਾਬਾਂ ਦਾ ਵਰਤਮਾਨ ਅਤੇ ਭਵਿੱਖ
- ਜੈਮੀਨਾਈ ਪਰੋ ਵਿਚ ਪੰਜਾਬੀ ਭਾਸ਼ਾ ਦੀ ਅਣਹੋਂਦ ਦੇ ਕਾਰਨ ਅਤੇ ਸੁਝਾਅ
- ਆਰਟੀਫਿਸ਼ਲ ਇੰਟੈਲਿਜੈਂਸ ਅਤੇ ਸਥਾਨਕ ਭਾਸ਼ਾਵਾਂ
- ਸਥਾਨਕ ਭਾਸ਼ਾਵਾਂ ਵਿਚ ਉਪਲੱਬਧ ਵਿਭਿੰਨ ਸਾਫਟਵੇਅਰ ਅਤੇ ਇਨ੍ਹਾਂ ਦੀ ਵਰਤੋਂ
- ਪੰਜਾਬੀ ਸਾਹਿਤ ਵਿਚ ਡਿਜੀਟਲ ਯੁੱਗ ਦੇ ਪ੍ਰਭਾਵਾਂ ਦੀ ਪੇਸ਼ਕਾਰੀ
- ਡਿਜੀਟਲ ਯੁਗ ਵਿਚ ਅਨੁਵਾਦ ਦੀ ਸਥਿਤੀ
- ਡਿਜੀਟਲ ਕ੍ਰਾਂਤੀ ਦੇ ਕਾਰਨ ਆਈ ਸਭਿਆਚਾਰਕ ਤਬਦੀਲੀ
- ਕਿਤਾਬ ਬਨਾਮ ਈ-ਕਿਤਾਬ
- ਭਾਸ਼ਾ ਅਤੇ ਸਾਹਿਤ ਨਾਲ ਸੰਬੰਧਿਤ ਵਿਭਿੰਨ ਯੂਟਿਊਬ ਚੈਨਲ ਅਤੇ ਪੌਡਕਾਸਟ
- ਭਾਸ਼ਾ ਅਤੇ ਸਾਹਿਤ ਦੇ ਖੇਤਰ ਵਿਚ ਸਮਾਰਟ ਫੋਨਾਂ ਦਾ ਯੋਗਦਾਨ

ORGANIZING COMMITTEE | आयोजक समिति | प्रबंधकी कमेटी

Patron: Prof. Jatinder Bir Singh
संरक्षक: प्रो. जतिंदर बीर सिंह
ਸਰਪ੍ਰਸਤ: ਪ੍ਰੋ. ਜਤਿੰਦਰ ਬੀਰ ਸਿੰਘ

Convenor: Dr. Vaibhav Puri
संयोजक: डॉ. वैभव पुरी
ਕਨਵੀਨਰ: ਡਾ. ਵੈਭਵ ਪੁਰੀ

Co-Convenor: Dr. Harpreet Kaur
सह संयोजक: डॉ. हरप्रीत कौर
ਸਹਿ-ਕਨਵੀਨਰ: ਡਾ. ਹਰਪ੍ਰੀਤ ਕੌਰ

Prof. Jyoti Kaur
प्रो. ज्योति कौर
ਪ੍ਰੋ. ਜਯੋਤੀ ਕੌਰ

Prof. D.D. Chaturvedi
प्रो. डी. डी. चतुर्वेदी
ਪ੍ਰੋ. ਡੀ. ਡੀ. ਚਤੁਰਵੇਦੀ

Dr. Paramjeet Kaur
डॉ. परमजीत कौर
ਡਾ. ਪਰਮਜੀਤ ਕੌਰ

Mrs. Jasjit Kaur Kochher
श्रीमती जसजीत कौर
ਮਿਸ. ਜਸਜੀਤ ਕੌਰ

Dr. Gurminder Kaur
डॉ. गुरमिंदर कौर
ਡਾ. ਗੁਰਮਿੰਦਰ ਕੌਰ

Dr. Rekha Sharma
डॉ. रेखा शर्मा
ਡਾ. ਰੇਖਾ ਸ਼ਰਮਾ

Dr. Sarabpreet Kaur
डॉ.सरबप्रीत कौर
ਡਾ. ਸਰਬਪ੍ਰੀਤ ਕੌਰ

Ms. Ushveen Kaur
श्रीमती उशवीन कौर
ਮਿਸ. ਉਸ਼ਵੀਨ ਕੌਰ

Dr. Megha Ummat
डॉ. मेघा उम्मत
ਡਾ. ਮੇਘਾ ਉੱਮਤ

Mrs. Shelly Verma
श्रीमती शैली वर्मा
ਮਿਸ. ਸ਼ੈਲੀ ਵਰਮਾ

Dr. Tarvinder Kaur
डॉ. तरविंदर कौर
ਡਾ. ਤਰਵਿੰਦਰ ਕੌਰ

Mr. Bhupinder Pal Singh
स. भूपिंदर पाल सिंह
ਸ. ਭੁਪਿੰਦਰ ਪਾਲ ਸਿੰਘ

Dr. Kriti Chadha
डॉ. कृति चड्ढा
ਡਾ. ਕ੍ਰਿਤੀ ਚੱਢਾ

Ms. Ankita Aggarwal
श्रीमती अंकिता अग्रवाल
ਮਿਸ. ਅੰਕਿਤਾ ਅਗਰਵਾਲ

Ms. Manleen Kaur
श्रीमती मनलीन कौर
ਮਿਸ. ਮਨਲੀਨ ਕੌਰ

Dr. Jasneet Kaur
डॉ. जसनीत कौर
ਡਾ. ਜਸਨੀਤ ਕੌਰ

Dr. Meenakshi Rani
डॉ. मीनाक्षी रानी
ਡਾ. ਮੀਨਾਕਸ਼ੀ ਰਾਣੀ

Ms. Pratibha Suri
श्रीमती प्रतिभा सूरी
ਮਿਸ. ਪ੍ਰਤਿਭਾ ਸੂਰੀ

For queries related to English session, mail at:
pratibha@sggscc.ac.in

संगोष्ठी में हिंदी भाषा से संबंधित अन्य जानकारी के लिए meenakshi@sggscc.ac.in पर मेल कर सकते हैं।

ਪੰਜਾਬੀ ਖੋਜ-ਪੱਤਰ ਨਾਲ ਸੰਬੰਧਿਤ ਕਿਸੇ ਹੋਰ ਜਾਣਕਾਰੀ ਲਈ ਈਮੇਲ – tarvinderkaur@sggscc.ac.in

IMPORTANT INFORMATION I
सार प्रस्तुति के लिए दिशानिर्देश
ਐਬਸਟ੍ਰੈਕਟ ਭੇਜਣ ਲਈ ਲੋੜੀਂਦੇ ਨਿਰਦੇਸ਼

Abstracts should be of 250-350 words, based on the relevant topic. The abstract should clearly outline the objectives, methodology, approach, and findings of the research paper. The abstract should include at least five keywords related to the research topic. Times New Roman (font size 12) should be used for the abstract. The first page of the abstract should include the title of the paper, the name of the researcher, and details of the affiliating institution.

संरचित सार 250 से 350 शब्दों के बीच में होना चाहिए, जिसमें अध्ययन का उद्देश्य, डिज़ाइन/पद्धति/दृष्टिकोण और निष्कर्ष के साथ पांच बीज शब्द शामिल हों। मार्जिन : 1.5 इंच, फॉण्ट : यूनिकोड या कृतिदेव 10 , स्पेसिंग :1.5; संदर्भ : एपीए शैली। कवर पृष्ठ पर शीर्षक, लेखक का नाम और ई मेल आई डी होनी चाहिए । सभी प्राप्त सार की समीक्षा की जाएगी ।

ਐਬਸਟ੍ਰੈਕਟ 250-350 ਸ਼ਬਦਾਂ ਵਿਚ ਸੰਬੰਧਿਤ ਵਿਸ਼ੇ ਉਪਰ ਆਧਾਰਿਤ ਹੋਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ। ਐਬਸਟ੍ਰੈਕਟ ਵਿਚ ਖੋਜਪੱਤਰ ਦਾ ਉਦੇਸ਼, ਇਸ ਦੀ ਅਧਿਐਨਸਾਮਗ੍ਰੀ, ਅਧਿਐਨਵਿਧੀ, ਪਹੁੰਚ ਅਤੇ ਪ੍ਰਾਪਤੀਆਂ ਦਾ ਸਪੱਸ਼ਟ ਵੇਰਵਾ ਹੋਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ। ਖੋਜਪੱਤਰ ਦੇ ਵਿਸ਼ੇ ਨਾਲ ਸੰਬੰਧਿਤ ਘੱਟ ਤੋਂ ਘੱਟ ਪੰਜ ਕੁੰਜੀਵਤ ਸ਼ਬਦ ਸ਼ਾਮਿਲ ਹੋਣੇ ਚਾਹੀਦੇ ਹਨ। ਐਬਸਟ੍ਰੈਕਟ ਲਈ ਅਨਮੋਲ ਲਿਪੀ ਜਾਂ ਰਾਵੀ ਯੂਨੀਕੋਡ ਫੌਂਟ ਵਰਤਿਆ ਜਾ ਸਕਦਾ ਹੈ। ਫੌਂਟ ਸਾਈਜ਼ 12 ਹੋਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ। ਐਬਸਟ੍ਰੈਕਟ ਨਾਲ ਸੰਬੰਧਤ ਫਾਈਲਾਂ ਪੀ. ਡੀ. ਐਫ. ਫਾਰਮੈਟ ਵਿਚ ਹੀ ਭੇਜੀਆਂ ਜਾਣ। ਐਬਸਟ੍ਰੈਕਟ ਲਈ ਦੋ ਫਾਈਲਾਂ ਨੱਥੀ ਕਰਨੀਆਂ ਜ਼ਰੂਰੀ ਹਨ:- ਪਹਿਲੀ ਫਾਈਲ ਸਿਰਲੇਖ ਦੀ ਹੋਵੇਗੀ ਜਿਸ ਵਿਚ ਖੋਜਪੱਤਰ ਦਾ ਸਿਰਲੇਖ, ਖੋਜਾਰਥੀ ਦਾ ਨਾਂ ਅਤੇ ਸੰਸਥਾਨ ਦਾ ਵੇਰਵਾ ਦੇਣਾ ਜ਼ਰੂਰੀ ਹੈ। ਦੂਜੀ ਫਾਈਲ ਵਿਚ ਪੇਪਰ ਦਾ ਸਿਰਲੇਖ ਅਤੇ ਐਬਸਟ੍ਰੈਕਟ ਹੋਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ।

Guidelines for Paper Submission
शोध पत्र प्रस्तुति के लिए दिशा निर्देश
ਖੋਜ-ਪੱਤਰ ਜਮਾ ਕਰਾਉਣ ਲਈ ਨਿਰਦੇਸ਼

The research paper must be the original work of the researcher and should not have been submitted or published elsewhere. It must be free from plagiarism. Researchers must ensure that the plagiarism percentage does not exceed 20%. The word limit for research papers is 5000-8000 words. प्रस्तुत किया जाने वाला पूरा शोध पत्र लेखक का मौलिक कार्य हो जो पहले से प्रकाशित या किसी अकादमिक प्रकाशन के साथ समीक्षाधीन ना हो। सभी शोध पत्र डबल-ब्लाइंड समीक्षा प्रक्रिया से गुज़रेंगे। लेखक यह जांच लें कि प्रस्तुत शोध पत्र साहित्यिक चोरी की सीमा के 20% से अधिक नहीं होना चाहिए, अन्यथा अस्वीकार कर दिया जाएगा। ਖੋਜਪੱਤਰ, ਖੋਜਾਰਥੀ ਦਾ ਨਵਾਂ ਅਤੇ ਮੌਲਿਕ ਕਾਰਜ ਹੋਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ। ਇਹ ਕਾਰਜ ਪਹਿਲਾਂ ਕਿਤੇ ਵੀ ਭੇਜਿਆ ਜਾਂ ਛਪਿਆ ਨਾ ਹੋਵੇ ਅਤੇ ਉਸ ਵਿਚ ਸਾਹਿਤਕ ਚੋਰੀ ਨਾ ਕੀਤੀ ਗਈ ਹੋਵੇ। ਖੋਜਕਰਤਾ ਲਈ ਇਹ ਸੁਨਿਸ਼ਚਿਤ ਕਰਨਾ ਲਾਜ਼ਮੀ ਹੈ ਕਿ ਖੋਜਪੱਤਰ ਦਾ ਪਲੈਜਰਿਜ਼ਮ 20% ਤੋ ਜ਼ਿਆਦਾ ਨਾ ਹੋਵੇ। ਖੋਜ ਪੱਤਰ ਲਈ ਸ਼ਬਦਸੀਮਾ 5000-8000 ਸ਼ਬਦ ਹੋਵੇਗੀ। ਖੋਜਪੱਤਰ ਫਾਈਲ ਪੀ. ਡੀ. ਐਫ. ਫਾਰਮੈਟ ਵਿਚ ਹੀ ਭੇਜੀ ਜਾਏ।

Structure of the paper | शोध पत्र में मुख्य बिन्दु | ਖੋਜ-ਪੱਤਰ ਦੀ ਆਰਜ਼ੀ ਰੂਪ-ਰੇਖਾ

- Title of the Research Paper | शोध पत्र का शीर्षक | ਖੋਜਪੱਤਰ ਦਾ ਸਿਰਲੇਖ
- Authors detail | शोधकर्ताओं का विवरण | ਖੋਜਕਰਤਾਵਾਂ ਦੇ ਵੇਰਵੇ
- Abstract | सार | ਐਬਸਟ੍ਰੈਕਟ
- Keywords | बीज शब्द | ਕੁੰਜੀਵਤ ਸ਼ਬਦ
- Introduction | परिचय | ਜਾਣ-ਪਛਾਣ
- Research Methodology | साहित्य समीक्षा | ਅਧਿਐਨਵਿਧੀ
- Results, Discussions, Conclusions & Implications| अध्ययन के परिणाम/निष्कर्ष/अध्ययन के निहितार्थ और सिफारिशें |ਵਿਸ਼ੇ ਉਪਰ ਪ੍ਰਾਪਤ ਆਲੋਚਨਾ /ਸਿੱਟੇ ਅਤੇ ਸਥਾਪਨਾਵਾਂ

Title Page, Abstract and Full paper must be submitted as three separate pdf files. शीर्षक पृष्ठ, सार और शोध पत्र तीन अलग-अलग पीडीएफ फाइलों के रूप में जमा किया जाना चाहिए। ਮੁੱਖ ਪੰਨਾ, ਐਬਸਟ੍ਰੈਕਟ ਅਤੇ ਪੂਰਾ ਖੋਜਪੱਤਰ ਤਿੰਨ ਵੱਖਰੀਆਂ ਪੀਡੀਐਫ ਫਾਈਲਾਂ ਦੇ ਰੂਪ ਵਿੱਚ ਜਮ੍ਹਾ ਕਰਨਾ ਲਾਜ਼ਮੀ ਹੈ।

IMPORTANT INFORMATION

The best paper presented in each of the language sessions will be awarded with a Prize of Rs. 7500/-. प्रत्येक सत्र से सर्वश्रेष्ठ शोधपत्र को विशेष मान्यता प्रमाणपत्र व ₹7500 की राशि प्रदान की जाएगी। ਤਕਨੀਕੀ ਸੈਸ਼ਨ ਵਿਚ ਪੜ੍ਹੇ ਗਏ ਖੋਜਪੱਤਰਾਂ ਵਿਚੋਂ ਉੱਤਮ ਮਿਆਰ ਵਾਲੇ ਖੋਜਪੱਤਰ ਨੂੰ ਸ਼੍ਰੇਸ਼ਠ ਖੋਜਪੱਤਰ ਦੇ ਸਰਟੀਫਿਕੇਟ ਅਤੇ 7500/- ਦੀ ਨਕਦ ਰਾਸ਼ੀ ਨਾਲ ਸਨਮਾਨਿਤ ਕੀਤਾ ਜਾਏਗਾ।

Certificates will be given to scholars presenting papers at the conference. शोधपत्र प्रस्तुत करने वाले सभी प्रतिनिधियों को प्रशंसा प्रमाणपत्र प्रदान किए जाएंगे। ਪੇਪਰ ਪੇਸ਼ ਕਰਨ ਵਾਲੇ ਸਾਰੇ ਵਿਦਵਾਨਾਂ ਨੂੰ ਸਰਟੀਫਿਕੇਟ ਦਿੱਤੇ ਜਾਣਗੇ।

Research papers presented at the conference will be compiled and published in book form. Best Papers will be published in the UGC Care listed journal/s subject to their review process. प्रकाशन का अवसर : सर्वश्रेष्ठ शोध पत्र यूजीसी केयर द्वारा सूचीबद्ध जर्नल में (चयन प्रक्रिया के अनुसार) प्रकाशित किए जाएँगे। ਕਾਨਫਰੰਸ ਵਿਚ ਪੜ੍ਹੇ ਗਏ ਖੋਜਪੱਤਰਾਂ ਨੂੰ ਪੁਸਤਕ ਰੂਪ ਵਿਚ ਛਾਪਿਆ ਜਾਏਗਾ। ਸ਼੍ਰੇਸ਼ਠ ਖੋਜਪੱਤਰ ਨੂੰ ਯੂ.ਜੀ.ਸੀ ਕੇਅਰਲਿਸਟ ਜਰਨਲ ਵਿਚ ਛਪਵਾਉਣ ਦਾ ਜਤਨ ਕੀਤਾ ਜਾਏਗਾ (ਜਰਨਲ ਦੇ ਰੀਵਿਊ ਬੋਰਡ ਦੀ ਸਹਿਮਤੀ ਉਪਰੰਤ) ।

IMPORTANT DATES

Abstract Submission deadline
सार प्रस्तुत करने की अंतिम तिथि
ਐਬਸਟ੍ਰੈਕਟ ਭੇਜਣ ਦੀ ਆਖਰੀ ਮਿਤੀ
23.09.2024

Full Paper Submission deadline
शोध पत्र जमा करने की अंतिम तिथि
ਪੂਰੇ ਖੋਜ-ਪੱਤਰ ਭੇਜਣ ਦੀ ਮਿਤੀ
14.10.2024

Acceptance of Papers
शोध पत्र स्वीकृति की सूचना
ਖੋਜ-ਪੱਤਰ ਪ੍ਰਵਾਨਗੀ ਦੀ ਮਿਤੀ
27.10.2024

Registrations begin
पंजीकरण की तिथि
ਰਜਿਸਟ੍ਰੇਸ਼ਨ ਸ਼ੁਰੂ ਹੋਣ ਦੀ ਮਿਤੀ
28.10.2024

FOR SUBMISSION & REGISTRATION SCAN OR VISIT WLC SGGSCC

FOR MORE DETAILS, MAIL
wlc@sggscc.ac.in